# छत्तीसगढ़ में ब्रिटिश शासन (1854 से 1947 ई.)

- **13 मार्च 1854** में नागपुर राज्य के अंग्रेजी साम्राज्य में विलय के साथ ही छत्तीसगढ़ प्रत्यक्ष रूप से ब्रिटिश शासन का अंग बन गया तथा विलय की घोषणा की गयी।
- प्रशासन के लिए ब्रिटिश प्रतिनिधि के रूप में डिप्टी कमिश्नर की नियुक्ति की गयी। प्रथम डिप्टी कमिश्नर के रूप में **1 फरवरी 1855** का **चार्ल्स सी. इलियट** की नियुक्ति की गयी।
- इनका अधिकार क्षेत्र वह था जो ब्रिटिश नियंत्रण काल में एगेन्यू का था।
  **गांव → तहसील → जिला → संभाग → प्रांत → देश**
- डिप्टी कमिश्नर की सहायता के लिए एक सहायक कमीश्नर व दो अतिरिक्त सहायक कमिश्नर नियुक्त किये गये।
- अतिरिक्त कमीश्नर का पद भारतीयों के लिए सुरक्षित होता था।

डिप्टी कमिश्नर की सहायता के लिए वेतन – 300 रू.
- सहायक कमिश्नर (वेतन 200 रू.) होता था
- अतिरिक्त कमीशनर होता था।
  बिलासपुर – गोपालराव आनन्द (पहले अतिरिक्त कमिश्नर)
  (रायपुर – मोहिबुल हसन (वेतन – 175 रू.)

- इनके अन्तर्गत प्रशासन को दो वर्गों में विभक्त किया गया :–
  **1. माल**
  **2. दिवानी**
- डिप्टी कमिश्नर को दिवानी शाखा के प्रशासन हेतू दोनों मूल और अपील संबंधी अधिकार सौपे गये जो 5000 रू. से अधिक होते थे।
- **1854 –1855** तहसीली व्यवस्था का प्रारंभ किया गया
- छ.ग. में प्रथम प्रशासनिक परिवर्तन करते हुए, अंग्रेजों ने तहसीलदारी व्यवस्था प्रारंभ किया।
- **1854** में पहली बार तहसील बना – **1. रायपुर 2. रतनपुर, 3. धमतरी**
- प्रत्येक मुख्यालय में एक–एक तहसीलदार रखा गया जो उस क्षेत्र का प्रमुख होता था।
- परगनों में कमाविंसदार के स्थान पर नायब तहसीलदार नियुक्त किया गया। यह पद भी भारतीयों के लिए सुरक्षित था।
  **1 फरवरी 1847 दो नये तहसील** – 1. धमधा 2. नवागढ़
- परगनों को मिलकर तहसील बनाया गया और तहसीलदार की नियुक्ति की गयी।

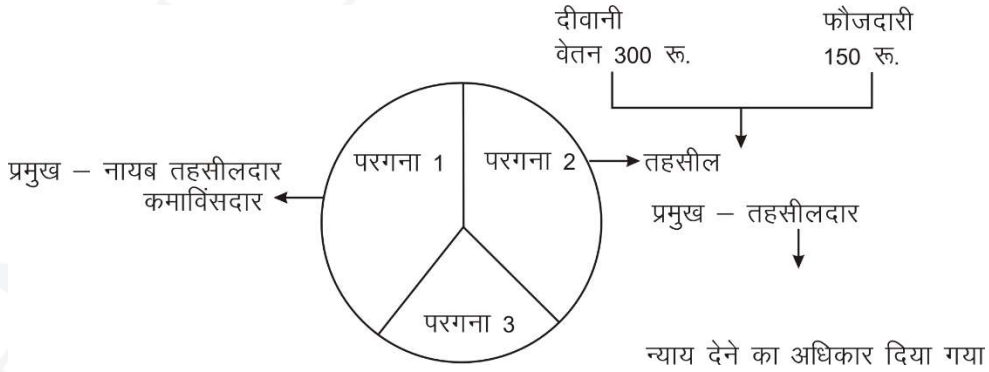

| | |
|---|---|
| **1861** | • मध्यप्रांत का गठन किया गया।<br>• मुख्यालय – नागपुर<br>• 3 संभाग व 10 जिले<br>• नागपुर संभाग – नागपुर, वर्धा भण्डारा व चांदा<br>• रायपुर संभाग – रायपुर, बिलासपुर, संबलपुर<br>• गोदावरी तालुक संभाग – गोदावरी तालुक व अपर गोदावरी व बस्तर |
| **1862** | • छ.ग. को स्वतंत्र संभाग का दर्जा दिया गया जिसका मुख्यालय रायपुर था।<br>• छ.ग. के तीन जिले 1. रायपुर 2. बिलासपुर 3. संबलपुर<br>• रायपुर व बिलासपुर में 2 डिप्टी कमिश्नर रखे गये। |
| **1905** | • बंगाल विभाजन हुआ। जिसके तहत कुछ क्षेत्र तत्कालिक बंगाल प्रांत को दे दिया गया।<br>• 1. संबलपुर 2. बामरा 3. रासराखोल 4. सोनपुर 5. कालाहांडी<br>• कुछ क्षेत्र बंगालप्रात से मध्यप्रांत में जोड़े गये।<br>• 1. कोरिया 2. चांगभखार 3.सरगुजा 4. जशपुर 5. उदयपुर (रायगढ़) |
| **1935** | • मध्यप्रांत व बरार का गठन किया गया। |
| **1 नवंबर 1956** | • छत्तीसगढ़ को मध्यप्रदेश के साथ प्रशासनिक दृष्टिकोण से रखा गया। |
| **1 नवंबर 2000** | • छत्तीसगढ़ स्वतंत्र राज्य बना |
| **नोट :–** | |
| **1855** | • नागपुरी रूपया चलाना बंद कर दिया गया।<br>• ईस्ट इंड़िया कंपनी के रूपये को कानूनी मान्यता। |
| **1858** | • पुलिस मैनुअल लागू किया गया। |
| **1863** | • GE रोड का निर्माण करवाया गया।<br>✓ नागपुर से संबलपुर तक<br>✓ व्यापारिक गतिविधियों के लिए अंग्रेजो द्वारा बनाया गया। |

## छत्तीसगढ़ में ब्रिटिश शासन व्यवस्था

### न्याय व्यवस्था

- न्याय व्यवस्था का कार्य जिला अधिकारी व उनके अधीनस्थों को सौंपा
- रायपुर व बिलासपुर में डिप्टी कमिश्नर की नियुक्ति की गयी।
- संबलपुर में – कमिश्नर, सहायक कमिश्नर, अतिरिक्त सहायक कमिश्नर, तहसीलदार नियुक्त किया गया।
- जिला और सत्र न्यायधीध को पदस्थ किया। मुख्यालय – रायपुर बनाया गया।
- 1925 में दीवानी व फौजदारी न्यायालय की व्यवस्था की गई
- 1871 में अपराधिक जनजातीय अधिनियम लागू किया गया।

### जेल व्यवस्था

- 1858 में कैदियों के लिए जेल में मेस की व्यवस्था की गयी।
- स्थानीय डाक्टर की व्यवस्था की गयी।
- एक वर्ष से अधिक सजा के लिए नागपुर कारागार भेजा जाता था। कैदियों को बागवानी व अन्य प्रकार की व्यापारिक शिक्षा देने की व्यवस्था की गयी।
- अपराधों के अनुसार अलग–अलग रंग की वर्दी दी जाती थी।
- डिप्टी कमीश्नर जेल की व्यवस्था का निरीक्षण करते थे।
- 1862 में जेल में एक सिविल सर्जन की नियुक्ति की गयी।

## राजस्व व्यवस्था

- तीन वर्षीय राजस्व व्यवस्था लागू की।
- 1855 –57 तक के लिए बनी थी
- कई गांव सम्मिलित कर रेवेन्यू सर्कल बनाया गया।
- तीन पुराने परगनों, राजरो, लवन, खल्लारी के स्थान पर 4 नये परगने गूलू, सिमगा, मारो और बिलासपुर का निर्माण किया गया।
- राजस्व की दृष्टि से परगनों को तीन भागों में विभक्त किया गया।
  1. खालसा क्षेत्र 2. जमीदारी क्षेत्र 3. ताहुतदारी क्षेत्र
- **1 जून 1856** में संपूर्ण आय को चार मदों में बांटा गया।
  1. भूराजस्व 2. आबकारी
  3. सायर (चुंगीकर)
  4. पंडरी (गैर किसानों पर विशेषकर)
- 1856 में नये अधिकारी नियुक्त किए गये।
  ✓ रीस्तेदार ✓ श्री रीस्तेदार ✓ मुहाफिज ✓दफ्तरी
  ✓ वासील –बाकी नवीस
  ✓ परगना नवीस ✓ मोहरिरे ✓ नाजिर
- कोषागार अधिकारी खजांची
  ✓ सियनवीस ✓ मोहर्रिर ✓ फोतदार
- राजस्व मामों से संबंधित नियमावाली ✓ दस्तूर उल अमल

## यातायात व्यवस्था

- रायपुर– नागपुर सड़क योजना को इस काल मे एगन्यू द्वारा क्रियान्वित किया गया।
- सड़कों की देखभाल हेतु कैप्टन फारेस्टर की नियुक्ति की गई थी।
- नागपुर रायपुर सड़क निर्माण कार्य हेतु **कैप्टन ब्लेक** और सहयोगी **मि. फिटरोज** को नियुक्त किया गया था।
- मुख्य सड़कों के रखरखाव का उत्तरदायित्व मिलिटरी बोर्ड पर था।
- 1854 में इस हेतु पृथक लोक कार्य विभाग स्थापित किया गया।
- 1862 में देश के महत्वपूर्ण सड़क ग्रेट ईस्टर्न मार्ग पूर्ण हुई।
- लार्ड कर्जन के काल तक छ.ग. की सभी सड़के जी.ई. रोड से जुड़ गई थी।
- रायपुर से सिंरोच, रायपुर से चांदा, बस्तर से भद्राचलम, रायपुर से कालाहांडी, तक मार्ग ब्रिटिश काल में बनाये गये।
- बिलासपुर जिले में :–
  **1986 ई.** → धरमजयगढ़ से खरसिया मार्ग
  जशपुर नगर से रांची
  रायपुर से → रायपुर से जगदलपुर
  भोपालपट्टनम सुकमा

1905 में सरगुजा के मध्यप्रांत में विलय के साथ अंबिकापुर को बिलासपुर से जोड़ा गया।

## पुलिस व्यवस्था

- पुलिस प्रशासन की दृष्टि से संपूर्ण छ.ग. को चार भागों में बांटा गया –
  1. रायपुर, सदर 2. रायपुर तहसीलदारी क्षेत्र
  3. धमतरी तहसीलदारी क्षेत्र 4. रतनपुर तहसीलदारी क्षेत्र
- सितंबर 1856 में नई व्यवस्था लागू की गई।
- 15 पुलिस थानों का निर्माण किया गया।
- 1858 ई. में पुलिस मेनुअल लागू किया गया।
- रायपुर व बिलासपुर के बीच सड़क सुरक्षा हेतु पुलिस थानों का गठन किया गया।
- 1862 में नवीन पुलिस व्यवस्था लागू की गयी जिसमें जिला पुलिस अधीक्षक जिले का प्रमुख अधिकारी होता था।
- सहायक जिला पुलिस अधीक्षक, निरीक्षक, मुख्य आरक्षक, प्रधान आरक्षक, आरक्षक पद सृजन किया गया।

## कृषि व्यवस्था

- प्रदेश की कर व्यवस्था त्रासदीकारी थी। प्रांत मे कृषि विभाग की स्थापना की गयी।
- इसका प्रमुख कृषि संचालक
- विभाग उन्नत बीज की व्यवस्था करता था।
- कृषि शिक्षा को प्रोत्साहित करने के लिए नागपुर में एक कृषि महाविद्यालय की स्थापना रायपुर में और एक कृषि प्रयोगशाला स्थापित की गयी।
- प्रत्येक जिले में बीज फार्म खोले गये।
- प्रथम बार बंदोबस्त का कार्य अंग्रेजों के द्वारा किया गया। जिसमें अवधि 20 वर्ष थी।

## डाक व्यवस्था

- डाक परिवहन के लिए हरकारे व घोड़ों की व्यवस्था की गयी।
- रानी विक्टोरिया का चित्र अंकित था एवं कीमत 1 आना थी
- प्रथम – द्वितीय व तृतीय स्तर की डाक लाइनें स्थापित की गयी।
- अगस्त 1857 में लेफ्टिनेन्ट स्मिथ को रायपुर डाकघर का पोस्टमास्टर नियुक्त किया गया।

## विनिमय व्यवस्था

- 5 जून 1855 में नागपुरी रूपया बंद कर दिया गया।
- कंपनी के रूपऐ को कानूनी तौर पर लागू किया गया। नगपुरी रूपया सौ रूपय के बराबर माना गया।
- 1 मई 1855 को कंपनी का नया सिक्का जारी किया गया।
- पुराने व नए सिक्के की अदला–बदली के लिए 6 माह का समय दिया गयां

## सिंचाई व्यवस्था

- सिंचाई विभाग की स्थापना की गयी नहरों का विस्तार किया गया।
- रूद्रीनहर (1912–15), माडमसिल्ली (1923–25) तांदूला और सूखा नदियों पर दो बांध बनाकर आदमाबाद नहर निकाली गयी।
- बिलासपुर मे खुड़िया बांध मनियारी नदी में एवं खारंग जलाशय खूटांघाट में बनाये गये।
- ब्रिटिश शासनकाल में यहां नवीन कृषि–पद्धति और सिंचाई पद्धति का सूत्रधार हुआ।

## त्रिवर्षीय व्यवस्था

- भूराजस्व की दो त्रिवषीर्यय व्यवस्थाएं लागू की गयी। जो 1855–61 तक चली
- हलों की संख्या के आधार पर भू–राजस्व का निर्धारण किया गया।

## शिक्षा व्यवस्था

- अंग्रेजी सत्ता की स्थापना के बाद इस दिशा में एक व्यवस्थित प्रयास आरंभ हुआ।
- हिन्दी के साथ अंग्रेजी माध्यम में शिक्षा दी जाती थी।
- अंग्रेजो द्वारा सामुदायिक शिक्षा प्रारंभ की गयी।
- कन्याशालाओं की पृथक स्थापना की गयी।
- डलहौजी और कर्जन के कालों के मध्य शिक्षा में उल्लेखनीय प्रयास हुए जिसका प्रभाव छत्तीसगढ़ में भी पड़ा।
- 20वीं. शताब्दी के आरंभ में राष्ट्रीय शिक्षा की नीति पर बल दिया गया।
- 1910 मे स्वतंत्र शिक्षा विभाग की स्थापना हुई।
- 1893 में राजकुमार कॉलेज की स्थापना की गयी। जहां रियासतों जमींदारों एवं धनाड्य वर्ग के छात्र अध्ययन करते थे।
- 1907 में सालेम कन्याशाला अंग्रेजी माध्यम में आरंभ हुयी। राष्ट्रीय विद्यालय की स्थापना की गयी इसके लिए भवन सेठ गोपीकिशन बाल किशन एवं रामकिशन ने दिया।
- मध्यप्रांत में सर्वप्रथम नागपुर विश्वविद्यालय की स्थापना 1923 में हुई और दूसरा विश्वविद्यालय सागर 1946 में स्थापित हुआ।
- 1937 में छत्तीसगढ़ शिक्षण समिति की स्थापना रायपुर में ठाकुर प्यारेलाल की अध्यक्षता में की गयी।
- 16 जुलाई 1938 में रायपुर छत्तीसगढ़ महाविद्यालय की स्थापना ज. योगानंदम ने की । इसके प्रथम प्राचार्य योगानंदम जी स्वंय बने।

## ➢ छत्तीसगढ़ में ब्रिटिश शासन का प्रभाव

- ब्रिटिश शासन व्यवस्था से छत्तीसगढ़ की भौतिक प्रगति हुई और वह आधुनिकता की ओर अग्रसर हुआ। इनकी सभ्यता और संस्कृति में नया परिवर्तन हुआ। ब्रिटिश शासनकाल में छत्तीसगढ़ की संस्कृति को जिन प्रभावों ने प्रभावित किया।

### धार्मिक परिवर्तन

- 19 वीं शताब्दी के आरंभ में अंग्रेजों ने यहां ईसाई धर्म के प्रचार को कानूनी मान्यता भी प्रदान कर दी।
- मिशनरियों द्वारा धर्मान्तरण हेतु अनेक प्रलोभनकारी कार्यक्रम चलाये गये।
- शिक्षा,धन,सामाजिक सम्मान एवं हिन्दूधर्म की आलोचना के माध्यम से यहां जनजातियों एवं दलितों को बड़े पैमाने पर हिन्दू से ईसाई बनाया गया।
- हिन्दू धर्म की प्राकृतिक श्रेष्ठता स्थापित करने हेतु ब्रम्ह समाज, आर्य समाज, प्रार्थना, रामकृष्ण मिशन जैसे संस्थानों का जन्म हुआ।
- छ.ग. में धर्म के नाम पर शोषण व भेदभाव यह नये धार्मिक वातावरण का निर्माण हुआ।
- सतनामी पंथ व कबीर पंथ का आरंभ हुआ।

### प्रशासनिक परिवर्तन

- नये पदों की स्थापना की गयी।
- गांवों में पटवारियों और सर्कल में एक रेवेन्यू इंस्पेक्टर की नियुक्ति की गयी।
- वरिष्ट अधिकारी के रूप में डिस्ट्रिक्ट और सेशन्स जज को पदस्थ किय ।
- धर्मान्तरण के लिए तैयार करने हेतु मिशनरियों ने आदिवासी अंचलों मे अंग्रेजी शिक्षा का प्रसार किया।
- जिले का सर्वोच्च पुलिस अधिकारी पुलिस अधीक्षक होता था।
- 2 नवबंर 1861 मे जब मध्यप्रांत बना तब छत्तीसगढ़ मे प्रशासन को चीफ कमिश्नर के अधीन रखा गया।
- 1862 में छत्तीसगढ़ को एक स्वतंत्र संभाग का दर्जा मिला। जिसका मुख्यालय – रायपुर था।

### पाश्चात्य शिक्षा

- भारत में अंग्रेजी शिक्षा का बीजारोपण हुआ
- पाश्चात्य साहित्य, विज्ञान राजनीति, अर्थशास्त्र इतिहास और ज्ञान–विज्ञान की अन्य शाखाओं की शिक्षा का प्रसार हुआ।
- अंग्रेजी शिक्षा के प्रसार से भारतीय और यूरोपीय संस्कृति का समागम हुआ।
- चिकित्सा तथा इंजीनियरगि के अध्यापन का भी प्रबंध किया गया।
- छ.ग. महाविद्यालय, रायपुर और एस,बी.आर महाविद्यालय बिलासपुर का योगदान उल्लेखनीय है।
- समाज में पाश्चात्य शिक्षा का प्रभाव बढ़ने लगा उन्होंने देश में धार्मिक और सामाजिक सुधारों को प्रोत्साहित किया और राष्ट्रीय आंदोलन की नींव रखी।

### स्त्री शिक्षा को प्रोत्साहन

- स्त्री शिक्षा को प्रोत्साहित किया गया।
- लार्ड रिपन के शासन काल में हण्टर कमीशन ने स्त्री शिक्षा को प्रोत्साहित करने का सुझाव रख। कन्याशालाएं खोली गयी।
- डिस्ट्रिक्ट बोर्ड और म्यूनिसिपल ने भी अनेक कन्याशालाएं स्थापित की।
- रायपुर बिलासपुर आदि नगरों में पृथक कन्याशालाओं का निर्माण हुआ।
- शिक्षा के कारण स्त्रियों ने भी राष्ट्रीय आंदोलन में अपना योगदान दिया।

### आर्थिक विकास

- अंग्रेजो ने आते ही कृषि की उन्नति हेतु कार्य किया।
- नवीन भूमि व्यवस्था, राजस्व व्यवस्था का सूत्रपात किया गया।
- कर व्यवस्था को पुस्त एवं न्याय संगत बनाया गया।
- आर्थिक विकास के कारण आधुनिक युग का प्रारंभ हुआ।
- रेल यातायात के आरंभ ने छ.ग. की सीमित आर्थिक गतिविधियों को राष्ट्रव्यापी बना दिया।

| सामाजिक प्रभाव |
|---|
| • मुस्लिम आधिपत्य के काल में भारतीय समाज पर गहरा आघात हुआ।<br>• पाश्चात्य संस्कृति की महान देन भारतीय समाज का आधुनिकीकरण है, इसके कारण छत्तीसगढ़ सामाजिक रूढ़ियों से मुक्त होने लगा, सती प्रथा, शिशु हत्या, बाल विवाह आदि बुराइयों को समापत करने की प्रेरणा मिली, विधवा–विवाह की प्रथा चल पड़ी।<br>• नर–नारी की सामाजिक समानता स्थापित की गयी।<br>• पं. सुन्दरलाल शर्मा एवं गांधी जी ने हरिजनोद्धार हेतु आंदोलन चलाया।<br>• अंग्रेजी शिक्षा, संस्कृति एवं जीवन पद्धति का छ.ग. की सामाजिक व्यवस्था में प्रभाव पड़ा अछूतों की दशा अपेक्षाकृत सुधरने लगी। |

## 1857 की क्रांति और छत्तीसगढ़

### ➢ सोनाखान विद्रोह

- सोनाखान महानदी घाटी में स्थित इस राज्य की महत्वपूर्ण जमींदारी क्षेत्र थी।
- **1690** में कल्चुरी शासक बाहरेन्द्रसाय ने सैन्य सेवा के बदले बिसई ठाकुर बिंझवार को कर मुक्त जमीदारी दी थी।
- **1790** में इसी वंश का जमीदार रामराय ने कर न देने के लिए अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह छेड़ा जिसका दमन तत्कालिक ब्रिटिश अधीक्षक ऐगन्यू के द्वारा किया गया।
- रामराय ने वचन दिया की वह आगे विद्रोह नहीं करेगा और उसका पालन भी करेगा।
- **1830** में वीर नारायण सिंह सोनाखान के जमीदार बने।
- **1856** में सोनाखान क्षेत्र में भीषण आकाल पड़ा, भुखमरी की स्थिति पैदा हुई, जिसके कारण वीरनारायण सिंह ने कसडोल (खरौद) के एक व्यापारी माखनलाल के गोदाम से अनाज निकालकर लोगों में बांट दिया। 1400 बोरा चावल लूटा।
- तात्कालिक डिप्टी कमीश्नर **चार्ल्स. सी. इलियट** ने वीरनारायण सिंह के खिलाफ गिरफ्तारी वारण्ट जारी किया।
- **24 अक्टूबर 1856** को संबलपुर क्षेत्र से वीरनारायण सिंह गिरफ्तार कर लिये गये।
- **28 अगस्त 1857** को 10 माह 4 दिन रहने के बाद अपने तीन दोस्तों के साथ सुरंग बनाकर जेल से भाग निकले।
- इसी बीच वीरनाराण सिंह व अंग्रेजों के मध्य लड़ाई चलती रही पुनः **वह 20 अक्टूबर 1857** को कैप्टन स्मिथ के द्वारा गिरफ्तार किये गये।
- स्मिथ ने डिप्टी कमिश्नर से गुजारिश की ओर लिखा की – वीरनारायण सिंह को क्षमा देना सबसे बड़ा अपराध होगा।
- छत्तीसगढ़ **डिविजनल रिकार्ड्स पत्र क्र 256 दिनांक 10 दिसंबर 1857** के अनुसार वीरनारायण सिंह को **10 दिसंबर 1857** को फाँसी की सजा दी गई एवं डिप्टी कमीश्नर ने सोनाखान की जमीदारी को खालसा ताल्लुक में बदलने की अनुमति दी।

  **मुखबिर – देवरी के जमीदार (महाराज साय)**
- **10 दिसंबर 1857** को आदि महोत्सव मनाया जाता है।
- वीरनारायण सिंह को छत्तीसगढ़ अंचल में स्वतंत्रता संग्राम के **प्रथम शहीद** कहा जाता है।
- वीरनारायण सिंह के पुत्र गोविंद सिंह ने सुरेन्द्रसाय के साथ मिलकर महाराज साय की हत्या कर दी गयी ओर पुनः सोनाखान को जमींदार बन गये।
- शहीद वीरनारायण सिंह के नाम पर राज्य शासन ने कुछ विशेष कार्य किये जैसे –
  - ✓ **अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट स्टेडियम नया रायपुर**
  - ✓ **कोडार परियोजना महासमुन्द**
- आदिवासी व पिछड़े वर्ग के उत्थान के लिए **वीर नारायण सिंह पुरस्कार** दिया जाता है।

**नोट :–**

वीर नारायण सिंह की सजा के बाद ब्रिटिश शासन ने उन सभी लोगों को जिन्होनें नारायण सिंह के विरूद्ध अंग्रेजों की सहायता की थी, उनको लाभ दिया। माखन बनिया को लूटी हुई सम्पति का मुआवजा **1377 रू 3 आने** दिए गये। गिरफ्तारी से संबंधित सिपाहियों **को 20–20 रूपये** और जांच में अथवा किसी प्रकार से इस प्रकरण से संबंधित अधिकारी को **100–100 रू.** दिए गए।

## ➢ हनुमान सिंह का विद्रोह/सैन्य विद्रोह

- **बेसवाड़ा** राजपूत हनुमान सिंह रायपुर में स्थित सैन्य बल के तीसरे बटालियन में **मेगजीन लश्कर** के पद पर पदस्थ था।
- हनुमान सिंह ने वीर नारायण सिंह के बलिदान व 1857 की क्रांति से प्रभावित होकर **18 जून 1858** को रात्रि 7:30 बजे तीसरी टुकड़ी के (रायपुर) **सारजेण्ट मेजर सिडवेल** को उसके ही कमरे में अलवार को 9 बार वार कर मार डाला।
- 20 जनवरी को हनुमान सिंह ने डिप्टी कमिश्नर इलियट के बंगले में प्रवेश करने का उपक्रम किया, मगर सुरक्षा कर्मियों के सतर्क रहने के कारण सफलता नहीं मिली।
- भारतीय सैनिकों ने मिलकर विद्रोह कर दिया। अंग्रेज सैनिकों के द्वारा बहुत सारे भारतीय गिरफ्तार हुए। हनुमान सिंह भागने में सफल रहा।
- भारतीय सैनिकों ने मिलकर विद्रोह कर दिया। अंग्रेज सैनिकों के द्वारा बहुत सारे भारतीय गिरफ्तार हुए। हनुमान सिंह भागने में सफल रहा।
- **22 जनवरी 1858** को 17 भारतीय सैनिकों को देशद्रोह के आरोप में फांसी दे दी गयी।
- इनके नाम व पद इस प्रकार है– **गाजीखां, (हवलदार) व 16 (गोलन्दाज), शिवनारायण, भूलीस, अब्दुल हयात, पन्नालाल, मातादीन, बलली या बलिदू दुबे, ठाकुर सिंह, अकबर हुसैन, लालसिंह, परमानंद, बदलू दुर्गा प्रसाद, शोभाराम, नूर मोहम्मद, देवीदीन व शिवगोविन्द।**
- हनुमान सिंह की गिरफ्तारी पर 500 रू का इनाम घोषित किया गया। जीवित या मृत पकड़ने वाले को यह राशि मिलती पर हनुमान सिंह हाथ न आया।

**नोट** :– हनुमान सिंह को छत्तीसगढ़ का **मंगलपाण्डे** कहा जाता है। यह विद्रोह छत्तीसगढ़ का एकमात्र सैनिक विद्रोह है।

## ➢ उदयपुर के राजकुमारों का विद्रोह

- छत्तीसगढ़ के उत्तर में स्थित उदयपुर (धरमजयगढ़) एक करद राज्य था। जहां के राजा **कल्याण सिंह**, **शिवराजसिंह**, **धीरजसिंह** थे। उदयपुर तत्कालिक बंगाल प्रांत का एक महत्वपूर्ण रियासत था।
- **1852** में अंग्रेजों ने राजकुमार कल्याण सिंह व उनके दो भाई शिवराज सिंह धीरजसिंह पर मानववध का आरोप लगाकर रांची जेल में कैद कर लिया गया।
- उदयपुर को ब्रिटिश साम्राज्य में मिलाकर उनकी जिम्मेदारी किसी अन्य रिसायत को दे दी।
- **1857** की क्रांति के प्रभाव के कारण **क्रांतिकारियों** ने रांची पर कब्जा कर लिया। जिसके कारण तीनों राजकुमार भागने में सफल हुए और वह अपने रियासत उदयपुर पहुंचे।
- अंग्रेज रांची छोड़कर भाग गये।
- तीनों भाईयों ने **1858** में अंग्रेजों के खिलाफ युद्ध छेड़ा, संघर्ष के दौरान धीरज सिंह व कल्याण सिंह मारे गये।
- शिवराज सिंह को गिरफ्तार कर उन पर मुकदमा चलाकर **कालापानी की सजा** देकर अंडमान भेजा गया।

## ➢ संबलपुर के सुरेन्द्र साय का विद्रोह

- तत्कालिक समय में संबलपुर छ.ग. का ही हिस्सा था जहां पर **चौहान वंश** का शासन चल रहा था।
- **1827** में महाराज साय की मृत्यु के पश्चात परंपरा के अनुसार राजपुर–खिंड़ा शाखा के सुरेन्द्रसाय का अधिकार था, परन्तु अंग्रेज अधिकारियों ने राजा की विधवा **रानी मोहनाकुमारी** को गद्दी पर बैठाया।
- जन असंतोष को देखते हुए बरपाली के चौहान जमींदार परिवार के राजकुमार नारायणसिंह को सत्ता सौप दी। इससे वहां के रहने वाली गोड़ जनता ने अपना अपमान समझा।

महाराज साय + मोहनकुमारी
↓
सुरेन्द्र साय
↓
अंग्रेज V/S → बलभद्रदाऊ

- गोड़ो ने लखनपुर के जमीदार व सुरेन्द्रसाय के समर्थक बलभद्र दाऊ के खिलाफ अंग्रेजों से युद्ध छेड़ा युद्ध के दौरान बलभद्र दाऊ मारा गया।
- सुरेन्द्रसाय व उनके भाई को गिरफ्तार कर के हजारीबाग जेल में कैद कर लिया गया।
- **अक्टूबर 1858** में सुरेन्द्रसाय जेल से भागने में सफल रहे और लगातार **6 वर्षों** तक अंग्रेजों के खिलाफ संघर्ष करते रहे।
- **13 जनवरी 1864** मे पुनः गिरफ्तार किये गये और उन्हे काल–कोठरी की सजा देकर **असीरगढ़ जेल** (ग्वालियर/कोरबा) में रखा गया।
- **28 फरवरी 1884** को जेल में ही इनकी मृत्यु हो गयी। अपने अंतिम समय में सुरेन्द्रसाय अंधे हो गये थे।

**नोट** – सुरेन्द्रसाय को छ.ग. के स्वतंत्रता आंदोलन का **अंतिम शहीद** कहा जाता है।

## ➢ सोहागपुर का विद्रोह

- **स्थान** – सरगुजा
- **नेतृत्वकर्ता** – रंगाजी बापू
- रंगाजी बापू के नेतृत्व में इस राज्य के उत्तर में स्थित सभी रियासतों के राजाओं ने अंग्रेजो की नीतियों का विद्रोह किया।
- अंग्रेजो ने इनका दमन किया।

## ➢ सारंगगढ़ का विद्रोह

- 1856 में सारंगगढ़ रियासत के राजा कमलसिंह को फांसी दे दी गयी।

## ➢ बेगार विरोधी आंदोलन

- **स्थान** – बरगढ़ रिसायत
- **नेतृत्वकर्ता** – अजीत सिंह
- 1879 राजनांदगांव – सेवता ठाकुर

# छत्तीसगढ़ में राष्ट्रीय आंदोलन

## ➢ 1885 – भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (INC) की स्थापना

- **28 दिसंबर 1885** को ब्रिटिश अधिकारी ए.ओ. ह्यूम ने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (INC) की स्थापना की।
- इस संस्था को भारतीय जनता व ब्रिटिश शासन के मध्य एक सुरक्षा कवच के रूप में स्थापित किया गया।

## ➢ छत्तीसगढ़ में आंदोलन की पीठिका

- छत्तीसगढ़ में कांग्रेस की स्थापना के बाद पूनर्जागरण का कार्य आरंभ हो चुका था। छ.ग. में जनजागृति लाने के लिए –
  1. टाउन स्कूलों में निबंध लेखन
  2. वाद–विवाद समिति (1887)
  3. वैज्ञानिक तथा साहित्यिक समिति रायपुर (1870)
  4. रीडिंग क्लब रायपुर
  5. मालिनी रीडिंग क्लब रायपुर
  6. कवि समाज राजिम (1899)
- इन संस्थाओं के माध्यम से जनजागृति हेतु वातावरण निर्मित हुआ।

## ➢ 1889–INC अधिवेशन और छत्तीसगढ़

- **स्थान** – बंबई
- **अध्यक्ष** – सर विलियम
- पहली बार किसी INC सम्मेलन में छ.ग. के नेता ने भाग लिया।
  **भाग लेने वाले नेतागढ़**
  1. वामनराव लाखे
  2. माधवराव सप्रे
  3. रामदयाल तिवारी
  4. सी.एम.ठक्कर
- इस अधिवेशन में पहली बार मध्यप्रान्त व बरार प्रांत से **214 प्रतिनिधियों** ने भाग लिया।
- अधिवेशन से लौटने के बाद इन सभी लोगों ने छत्तीसगढ़ में कांग्रेस का प्रचार–प्रसार किया।

## ➢ 1891– राष्ट्रीय कांग्रेस अधिवेशन

- **स्थान** – नागपुर
- **अध्यक्ष** – पी आनंद चार्लू
- **छत्तीसगढ़ से भाग लेने वाले नेता** –
  1. वामनराव लाखे
  2. माधवराव सप्रे
  3. रामदयाल तिवारी
  4. सी.एम.ठक्कर
  5. बंद्रीनाथ साव

## ➢ 1899 – कवि समाज का गठन

- **स्थान** – राजिम
- **गठनकर्ता** – पं. सुन्दरलाल शर्मा
- उद्देश्य – लोगों मे जनजागृति लाना, राष्ट्रीयता की भावना पैदा करना एवं अधिकारों के प्रति सजग करना।

## ➢ 1900– मासिक पत्रिका

- 1900 में माधवराव सप्रे ने छत्तीसगढ़ मित्र नामक पत्रिका का प्रकाशन किया। जो एक मासिक पत्रिका थी।
- **सम्पादक** – माधवराव सप्रे
- **सहयोगी** – वामनराव लाखे एवं रामराव चिंचोलकर
- **उद्देश्य** – जनजागृति लाना व राष्ट्रीयता की भावना जगाना।
- **स्थान** – पेण्ड्रारोड से प्रकाशित किया गया।
- आर्थिक अभाव के कारण मात्र 3 वर्ष तक ही चल पाया।

**नोट** – छ.ग. मित्र को छ.ग. का पहला पत्रिका होने का गौरव प्राप्त है। माधवराव सप्रे को छ.ग. में **पत्रकारिता का जनक** कहा गया है।

## ➢ 1905– बंगाल विभाजन

- स्वदेशी आंदोलन का प्रभाव **1907** में दिखा।
- स्वदेशी वस्तु की दुकान खोली गयी।
- 1905 में बंग–भंग आंदोलन ने पूरे देश मे राष्ट्रीय जागृति उत्पन्न की।
- इस समय बिलासपुर में स्वतंत्रता आंदोलन का **नेतृत्व ताराचंद** कर रहे थे जिस जिले में राजनैतिक रूप से जागृत प्रथम कार्याकर्ता होने का श्रेय जाता है।
- पहला **प्रांतीय राजनैतिक परिषद** का गठन किया गया।
  **प्रथम** – नागपुर
  **1906 :–**
- पं. सुन्दरलरल शर्मा
  1. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (INC) के सदस्य बने।
  2. राजिम में समित्र मण्डल की स्थापना।

  **उद्देश्य** – 1. राष्ट्रीयता की भावना लाना
  2. जनजागृति लाना

## ➢ द्वितीय प्रांतीय राजनैतिक परिषद की बैठक

- **स्थान** – जबलपुर
- **अध्यक्ष** – दादासाहब खापर्डे
- इस अधिवेशन में दादा साहब खापर्डे द्वारा रखे गये स्वदेशी आंदोलन संबंधित विधेयक पारित किया गया। जिसे सर्वसम्पति से अपना लिया गया।
- रायपुर कांग्रेस की स्थापना सी.एम. ठक्कर के सहयोग से किया गया।

## ➢ 1907– सूरत अधिवेशन

- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का सूरत अधिवेशन
  **अध्यक्ष** – रासबिहारी घोष
- 1907 में रायपुर के टाउनहाल में कांग्रेस का प्रान्तीय सम्मेलन आयोजित हुआ।
  **भाग लेने वाले नेतागढ़ –**
  **1. पं. सुन्दरलाल शर्मा (छ.ग. से नेतृत्व करने वाला)**
  **2. नारायण राव मेघावले**

3. **शिवराम गुंजे**
4. **ई.राघवेन्द्र राव**

- सूरत अधिवेशन के पश्चात कांग्रेस दो दलों गरमदल व नरमदल में विभाजित हो गया। इसका प्रभाव छत्तीसगढ़ में भी दिखा।
- इनके प्रमुख नेताओं ने वापस आकर स्वदेशी वस्तु की दुकान खोली।
  - ✓ नाराणराव मेघावाले से महासमुंद, धमतरी, रायपुर में इन्होने खोली
  - ✓ ठाकुर प्यारेलाल सिंह से राजनांदगांव में दुकाने खोली
  - ✓ इन दुकानों का संचालन – डॉ. पूरन सिंह (राजिम), यादवराव जी (धमतरी), हरिप्रसाद सोनी (महासमुंद) किया।
- प्यारेलाल सिंह ने शिवलाल मास्टर व शंकरलाल खरे के साथ मिलकर खादी के प्रचार के साथ स्वदेशी आंदोलन प्रारंभ किया।

## ➢ 29 मार्च 1907, कांग्रेस का तीसरा प्रांतीय राजनैतिक सम्मेलन

- **स्थान** – रायपुर (टाउनहाल)
- **अध्यक्ष** – हरिसिंह गौर / श्री केलकर
- इस अधिवेशन में दादा साहब खापर्डे ने यह सुझाव दिया की सम्मेलन की कार्यवाही का प्रांरभ वन्दे मातरम् से हो, किन्तु डॉ. हरिसिंह गौर, डॉ मधोलकर इस सुझाव से सहमत नही थे। इस बात पर दादा साहब खापर्डे नाराज हो गये। सम्मेलन स्थल को छोड़कर चले गये।
- पं. रविशंकर ने लोगों को समझाया और प्रारंभ वन्दे मातरम से करने के लिए सहमति कर लिया। फिर भी खापर्डे जी वापस नही आये।
  (इस समय वंदे मातरम बोलने पर कैद की सजा दी जाती थी।)
- दादा साहब खापर्डे ने रायपुर में स्थित तात्यापारा के हनुमान मंदिर के सामने पृथक से एक बड़ी जनसभा को सम्बोधित किया।
- इनके सम्बोधन से प्रभावित होकर **विदेशी वस्त्रों की होली** जलाना प्रारंभ कर दिया।
- दूसरे दिन दादा साहब खापर्डे ने एक दूसरी जनसभा को सम्बोधित किया जो **बूटी के बाडे** में आहूत की गई थी।
- सूरत अधिवेशन के पश्चात कांग्रेस गरम दल व नरम दल में बट गया।

| गरम दल | नरमदल |
|---|---|
| 1. दादा साहब खापर्डे | 1. हरिसिंह गौर |
| 2. वामन राव लाखे | 2. श्री केलकर |
| 3. माधवराव सप्रे | 3. मधोलकर |
| 4. ई. राघवेन्द्र राव | 4. सी.एम. ठक्कर |
| 5. बैरिस्टर छेदीलाल | 5. पं. सुन्दर लाल शर्मा |
| 6. शिवराम गुंजे | 6. पं. रविशंकर शुक्ल |
| 7. पं. सुन्दरलाल शर्मा | |

- **1907** में राजिम में संस्कृत पाठशाला की स्थापना की।
- **1907** में पं. सुन्दरलाल ने संस्कृत पाठशाला की स्थापना की।
- **1907** में पहला छात्र आंदोलन
  **स्थान – राजनांदगांव (हाईस्टेट स्कूल नांदगांव)**
  **नेतृत्वकर्ता – ठा. प्यारेलाल सिंह**

## ➢ 1908– हिन्दी केसरी पत्रिका का प्रकाशन

- माधवराव सप्रे, बालगंगाधर तिलक के राष्ट्रीय विचारधारा से प्रथावित थे।
- बालगंगाधर तिलक ने **केसरी नामक पत्रिका** का मराठी प्रकाशन किया।
  जिसका हिन्दी भाषा में हिन्द केसरी पत्रिका के नाम से नागपुर से माधवराव सप्रे जी के द्वारा प्रकाशन किया गया।
  जिसमें कुछ विवादित लेख छापे –
  1. बम गोले का रहस्य
  2. उपाय टिकाउ नहीं
  3. देश का दुर्देव
- इन लेखों के कारण माधवराव सप्रे को **21 अगस्त 1908** में जेल हो गया।

- सप्रे जी का लिखित रूप से माफी मांगने को कहा गया और अंग्रेजो के द्वारा परिवार पर दबाव डाला गया और सप्रे जी से कहा गया ''यदि वह नही मानेगे, तो उनके भाई ने आत्महत्या करने का निर्णय लिया है।''
- परिवार के दबाव से हताश होकर क्षमापत्र पर हस्ताक्षर कर लिया।
- **2 नवंबर 1908** में रिहा हो गये।

## ➢ 1909– सरस्वती पुस्तकालय की स्थापना

- **स्थान** –राजनांदगांव
- **अध्यक्ष** – ठा. प्यारेलाल सिंह
- **उद्देश्य** – जनजागृति व राष्ट्रीयता की भावना लाना
- **सहयोगी** – छबीलाल चौबे, राजुलाल शर्मा
- इस पुस्तकालय की स्थापना राजनैतिक कारणों से की गयी।

## ➢ 1912– कान्यकुब्ज सभा का गठन

- **स्थान** – रायपुर
- **नेता** – पं. रविशंकर शुक्ल

## ➢ किसान सभा का गठन

- **स्थान** – दुर्ग
- **गठनकर्ता** – उदयराम

## ➢ विद्यार्थी कांग्रेस की स्थापना

- **स्थान – दुर्ग**
- **स्थापनाकर्ता** –
  - ✓ गंगा प्रसाद चौबे,
  - ✓ गणेश प्रसाद सिंगरौल,
  - ✓ चंद्रिका प्रसाद पाण्डेय

**नोट** – श्री रधुनंदन सिंगरौल क्रांतिकारी गतिविधियों के लिए जाने जाते है।
**1915** – मजिस्ट्रेट म्यूनिसिपल का चुनाव
**अध्यक्ष** – राब साहब,
**विरूद्ध** – मि. गाडगिल

## ➢ 20 जनवरी 1915 में मालगुजारों का सम्मेलन

- रायपुर के टाउनहाल में लगभग 300 मालगुजार एकत्रित हुए।

## ➢ 1916 होमरूल आंदोलन और छत्तीसगढ़

- छत्तीसगढ़ बाल बंगाधर तिलक के क्षेत्राधिकार में आये।
- 1917 को छत्तीसगढ़ मे होमरूल की स्थापना हुई।
- बाल गंगाधर तिलक ने एनी बेसेंट के सहयोग से होमरूल की स्थापना की।
- **होमरूल आंदोलन को छत्तीसगढ़ लाने का श्रेय** –
  1. माधवराव सप्रे
  2. मूलचंद बागड़ी
  3. लल्मणराव उदयगीर
- होमरूल आंदोलन में रायपुर जिले से प्रतिनिधित्व रायबहादूर ठक्कर ने किया।
- छ.ग. में कई जगह होमरूल लींग की स्थाना की गयी।

| राष्ट्रीय विद्यालय की स्थापना | | | | |
|---|---|---|---|---|
| क्र. | राष्ट्रीय विद्यालय | संचालक | घर/स्थान | अध्यापक |
| 1. | 5 फरवरी 1921 रायपुर | वामनराव लाखे | सेठ गोपीकिशन | रामनारायण तिवारी |
| 2. | जुलाई 1921 बिलासपुर | शिव दुलारे<br>प्राचार्य – शिवदुलारे | बद्रीनाथ साव | यदुनंदन प्रसाद |
| 3. | 1921– धमतरी | बाबु छोटे लाल<br>प्राचार्य – आजीबुर्रहमान<br>ठा. प्यारेलाल | बाबू छोटे लाल | बाबू छोटे लाल |
| 4. | 1921 राजनांदगांव | ठा. प्यारेलाल | | ठा. प्यारेलाल सिंह |

- 240 विद्यार्थियों ने अंग्रेजी विद्यालय का बहिष्कार कर इसमें प्रवेश किया।

**नोट** :– रायपुर – दस हजार राशि एकत्र की गई।
स्कूल की स्थापना के लिए 240 छात्रों ने अंग्रेजी विद्यालयों का बहिष्कार किया।
धमतरी – बाबू छोटे लालल स्वयं एवं 9 शिक्षकों के साथ अध्यापन का कार्य करते थे।
5वीं से हाई स्कुल की शिक्षा दी जाती थी।
वित्तीय परेशानियों के कारण 4 वर्ष के बाद बंद कर दिया गया।

- **विद्यालयों में पाठ्यक्रम** –
  ◊ सूत कातना ◊ हिन्दी माध्यम में अध्ययन
  ◊ कपड़ा बुनना ◊ छात्र आंदोलन का प्रचार–प्रसार
  ◊ बढ़ई व लौहार

**1921** – राष्ट्रीय विद्यालय की स्थापना पं. रविशंकर शुक्ल ने की।

## ➢ 7 फरवरी 1921 सत्याग्रह आश्रम

- **स्थान** – रायपुर
- **संचालक** – पं. सुन्दर लाल शर्मा
- **सत्याग्रह आश्रम के छात्र** –
  - ✓ हरखराम
  - ✓ शोभाराम
  - ✓ पंचमसिंह
  - ✓ विरमभट पटेल
  - ✓ परदेशी राम
  - ✓ रामदुलारे
  - ✓ श्याम लाल सोमर्थ
- **उद्देश्य** – प्रशिक्षित कर कर्तव्यनिष्ठ बनाना
- निःशुल्क आवास व भोजन की सुविधा
- कुल 53 छात्रों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया।

## ➢ राष्ट्रीय पंचायत

- **स्थान** – रायपुर 4 मार्च 1921
- **पंचायत मंत्री** – जसकरण डागा
- **15 अक्टूबर 1931** – 85 मामलों का निपटारा किया गया।
- **स्थान** – धमतरी समय फरवरी 2021
- बाजीराव कृदन्त के मकान में पंचायत अदालत आरंभ।

## ➢ 1924 का द्वितीय BNC मिल मजदूर आंदोलन

- **स्थान** – राजनांदगांव
- **नेता** – ठा. प्यारेलाल सिंह
- **विशेष** – इस आंदोलन के दौरान एक मजदूर की मृत्यु हो जाती है। मजदूरों की मांग के जांच के लिए जैक्सन आयोग का गठन।
  - ✓ ठा. प्यारेलाल को राजनांदगांव रियासत से निष्कासित किया जाता है।
  - ✓ 1937 के BNC मिल मजदूर आंदोलन का नेतृत्व रायपुर में ही रहकर किया।

## ➢ 1927 में साइमन कमीशन

- **नारा** – साइमन गो बैक
- 3 फरवरी 1928 को कमीशन बम्बई आया।
- विरोध में काले झण्डे लगाए गए। लाहौर में साइमन कमीशन के समय लाला लाजपतराय की पुलिस की लाठी की चोट से कुछ सप्ताह बाद मृत्यु हो गई।
- भगतसिंह और बटकेश्वर दन्त ने केन्द्रीय व्यवस्थापितका में बम फेंका था लाला लाजपतराय को पिटवाने वाले अधिकारी की हत्या 17 दिसंबर 1928 को कर दी।
- **1928 में INC अधिवेशन** – मोतीलाल नेहरू
- **Note :-** 1928 में रायपुर में यूथ लीग का गठन किया गया।
  - ✓ ठाकुर प्यारेलाल सिंह
  - ✓ मौलाना अब्दुल रउफ
  - ✓ यति यतनलाल

# सविनय अवज्ञा आंदोलन

## ➢ 1929 में लाहौर अधिवेशन

- **नेता** – पं. जवाहर लरल नेहरू
- **नेहरू रिपोर्ट** – मोतीलाल नेहरू द्वारा रिपोर्ट प्रस्तुत किया गया था।
- जिसमें पूर्ण स्वराज की मांग रखी गयी ओर कहा गया की **31 दिसंबर 1929** तक देश आजाद नही किया जाता है। तो हम 26 जनवरी 1930 से अपना स्वतंत्रता दिवस मनाएंगे।

## ➢ दांडी यात्रा

- 12 मार्च से 6 अप्रैल 1930 तक दांडी यात्रा (महात्मा गांधी द्वारा)
- 6 अप्रैल 1920 नमक बनाकर नमक कानून तोड़ा गया और देश में सविनय अवज्ञा आंदोलन प्रारंभ हुआ।
- 12 मार्च 1930 को गांधी जी ने अपनी प्रसिद्ध दांड़ी यात्रा प्रारंभ कर **साबरमती से दांडी** तक की यात्रा **24 दिनों** में पूरी की और 6 अप्रैल को नमक कानून तोड़ा।
- इस आंदोलन के लिए कार्यक्रम कांग्रेस द्वारा स्वीकृत किया गया था।
  1. नमक बनाना
  2. महिलाओं द्वारा शराब और विदेशी वस्तुओं की दुकानों पर धरना
  3. अस्पृश्यता का त्याग
  4. सरकारी संस्थाओं का बहिष्कार आदि।

## ➢ छत्तीसगढ़ में नमक कानून

- छ.ग. में बहुत से जगह नमक बनाकर नमक कानून तोड़ा गया।
- 6 अप्रैल 1930 से 13 अप्रैल 1930 तक राष्ट्रीय सप्ताह मनाया गया।

- **रायपुर** –
  - ✓ 13 अप्रैल 1930 को महाकौशल राजनीतिक परिषद का सम्मेलन रायपुर में होना तय हुआ। जिसकी अध्यक्षता – पं जवाहरलरल नेहरू ने की।
  - ✓ छियुकी (इबादत गंज) स्टेशन से नेहरू जी को गिरफ्तार कर लिया गया अतः अधिवेशन 2 दिन बाद 15 अप्रैल को सम्पन्न हुआ। **अध्यक्ष** – सेठ गोविनद दास
  - ✓ इस अधिवेशन में पं. रविशंकर शुक्ल ने हाइड्रोक्लोरिक एसिड और सोडे से नमक बनाकर नमक कानून तोड़ा।
  - ✓ सहयोगी – पं. द्वारिका प्रसाद मिश्र
    सेठ गोविन्द दास
    महंत लक्ष्मीनारायण
    गया चरण त्रिवेदी
  - ✓ इस अधिवेशन के अन्त में प्रांतीय युद्ध समिति का गठन हुआ। आंदोलन के प्रचार के दौरान पं. रविशंकर शुक्ल को बालाघाट से वापस आते समय गिरफ्तार कर जबलपुर जेल में डाल दिया गया।
- **बिलासपुर** – दिवाकर कार्लोकर
  वासुदेव देवरस
  बैरिस्टर छेदीलाल
  - ✓ 1930 में ठाकुर छेदीलाल की अध्यक्षता में जिला राजनीतिक परिषद् का सम्मेलन हुआ। जिसमें टाउनहाल में तिरंगा झण्डा फहराने का निर्णय लिया गया।
  - ✓ शासन के विरोध के बावजूद 8 अगस्त को यह कार्य किया गया।
  - ✓ शासकीय हाई स्कुल में तिरंगा फहराने के कारण 16 अगस्त को क्रान्ति कुमार भारतीय को गिरफ्तार कर 6 माह कैद की सजा दी गई।
- **धमतरी** – नारायण मेघावले
  पं. रविशंकर शुक्ल
  - ✓ 20 ग्राम नमक बनाकर नमक कानून तोड़ा जिसे धमतरी के करणजी तेजपाल भाई ने 61 रू. में खरीदा।
  - ✓ घनश्याम सिंह ने 1931 में फलगांव ताल में नमक बनाकर नमक कानून तोड़ा।
- **मुंगेली** :– रामगोपाल तिवारी
  कालीचरण शुक्ल
  गजाधर साव
  - ✓ नाले के पानी एवं मिट्टी से बाजार में नमक बनाकर नमक कानून तोड़ा।
  - ✓ जिसकी निलामी पर गंगाधर राव दीक्षित ने इसे 50 रू. में खरीदा।
  - ✓ इस आंदोलन में मुंगेली के सतनामियों ने भी अपना योगदान दिया। ये लोग शराब की दुकान में धरना देते और नारे लगाते थे।
- **दुर्ग** :– नरसिंह प्रसाद अग्रवाल
  रामप्रसाद देशमुख
  वाय.वही. ताम्रकार
  श्री रत्नाकर झाा
  घनश्याम सिंह गुप्त
  - ✓ 3 अगस्त 1930 को दुर्ग में सविनय अवज्ञा आंदोलन की शुरूवात हुए।
  - ✓ नरसिंह प्रसाद अग्रवाल ने लोगों से सरकारी नियम – कानून तोड़ने की अपील की। 13 अगस्त को गिरफ्तार कर लिये गये।
  - ✓ उदयराम द्वारा किसान सभा का गठन किया गया।
  - ✓ विद्यार्थी कांग्रेस की स्थापना – गंगाधर चौबे
    चन्द्रिका प्रसाद पांडे
    गणेश प्रसाद सिंगरोल
- **अन्य घटना** :–
  - ✓ राष्ट्रीय विद्यालय के छात्र प्रतिदिन **प्रभातफेरी** लगाते थे।
  - ✓ रायपुर राष्ट्रीय विद्यालय के प्रधान अध्यापक **नंद कुमार दानी** प्रतिदिन विद्यार्थी के साथ राष्ट्रीय झण्डा लेकर निकलते थे जिसके लिए उन्हे 16 नवंबर 1930 को जेल भेज दिया गया।
  - ✓ 1930 वामनराव लाखे ने रायपुर **को–ऑपरेटिव सेन्ट्रल बैंक** की स्थापना की
  - ✓ 1930 क्रांतिकुमार भारती को काशी के पोस्ट ऑफिस डकैती काण्ड में फरार घोषित किया।

## ➢ पांच पाण्डव का उदय

- सविनय अवज्ञा आंदोलन के प्रचार–प्रसार के लिए पांच लोगों का समूह बनाया गया जिसे स्थानीय लोगों ने पांच पाण्डव का नाम दे दिया।
  1. युधिष्ठिर – वामनराव लाखे
  2. भीम – महंतलक्ष्मी नारायण
  3. अर्जुन – ठाकुर प्यारेलाल
  4. नकुल – मौलाना अब्दुल रउफ
  5. सहदेव – शिवदास डागा

  (25 जून 1980 को इन पांडवों को रात्रि में घर से गिरफ्तार किया गया।)

## ➢ सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान महिलाओं की भूमिका

- राधाबाई
- मन्टोराबाई
- फुटकीबाई
- फुटेनियाबाई
- कोजाबाई
- केदकीबाई (डॉ. खूबचंद बघेल की माता)
- सत्याग्रहियों ने व्यापारी कीकाभाई की दुकाने के समक्ष धरना दिया धरने के अवसर पर **29 मार्च 1932** को गनौदवाले, डॉ. त्रेतानाथ तिवारी, और चार महिलाएं – मन्टोराबाई भुटकीबाई, फुटेयिाबाई, कोजाबाई जो गिरफ्तार कर लिया गया।
- पुलिस ने महिलाओं को घसीटा व अभद्र शब्द का प्रयोग करते हुए कोतवाली थाने में बंद कर दिया।
- **13 जून 1932** को राधाबाई को एक जूलूस का नेतृत्व करते हुए गिरफ्तार कर लिया गया।

## ➢ वानर सेना का गठन

- **प्रथम चरण** – बिलासपुर – वासुदेव देवरास
- **द्वितीयचरण** – रायपुर – बलीराम दुबे आजाद (14 वर्ष)
- **रायपुर का प्रमुख केन्द्र** – ब्राम्हणपारा
- **संचालक** – यतियतनलाल जैन
- **सेना का प्रमुख कार्य** –
  - ✓ पोस्टर एवं पर्ची का वितरण करना।
  - ✓ संदेश एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुंचाना।
  - ✓ एकत्रित होकर शहर भ्रमण करना।
  - ✓ छोटी सभाएं करना।
- 28 अगस्त 1932 को रक्षाबंधन के दिन पुलिस ने लाठीचार्ज व गिरफ्तारी की, बच्चों की गिरफ्तारी हुए।
- बलीराम दुबे (आजाद) रामाधार नाई नामक एक विद्यार्थी को इसी दिन 9 माह की सजा देकर जेल भेज दिया।
- **13 मार्च 1932** को बलीराम आजाद को ब्राम्हणपरा में भाषण देते हुए पुलिस ने बेतों से पीटा किन्तु अदम्य शौर्य का परिचय देते हुए अपने भाषण को जारी रखा।
- लोग बलीराम को प्रेम और गर्व से **आजाद** कहा करते थे। इन्ही के नाम पर उस चौक को आजाद चौक कहा जाता है।
- वानरसेना की गतिविधियों में पं. रविशंकर के बड़े पुत्र भगवतीचरण भी संलग्न थे।
- गांधी जी की गिरफ्तारी के बाद इलाहाबाद में कांग्रेस कार्य समिति की बैठक हुई।
- जिसमें जहां नमक बनाने की सुविधा नही है वहां अन्य कानून तोड़ा जाए जहां जंगलात है वहां जंगल कानून तोड़ा जाये।
- सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान छत्तीसगढ़ में ग्रामीण एवं आदिवासी भी जंगल कानून तोड़कर शासन का विरोध किया।
- शासन ने 1927 के वन अधिनियम के अंतगर्त सत्याग्रहियों पर व्यापक कार्यवाही की।

## ➢ जंगल सत्याग्रह :–

| क्र. | जंगल सत्याग्रह | स्थान | वर्ष |
|---|---|---|---|
| 1. | गट्टासिल्ली जंगल सत्याग्रह | धमतरी | जून 1930 |
| 2. | पोड़ी ग्राम जंगल सत्याग्रह | बिलासपुर | 1 जुलाई 1930 |
| 3. | मोहवाना पोड़ी जंगल सत्याग्रह | दुर्ग | 24 जुलाई 1930 |
| 4. | रूदी नवागांव जंगल सत्याग्रह | धमतरी | 22 अगस्त–5 मार्च 1931 |
| 5. | लभरा जंगल सत्याग्रह | महासमुंद | 8 सितंबर 1930 |
| 6. | तमोरा जंगल सत्याग्रह | महासमुंद | 9 सितंबर 1930 |
| 7. | बांधाखार जंगल सत्याग्रह | कोरबा | 1930 |
| 8. | सारंगढ़ जंगल सत्याग्रह | रायगढ़ | 1930 |

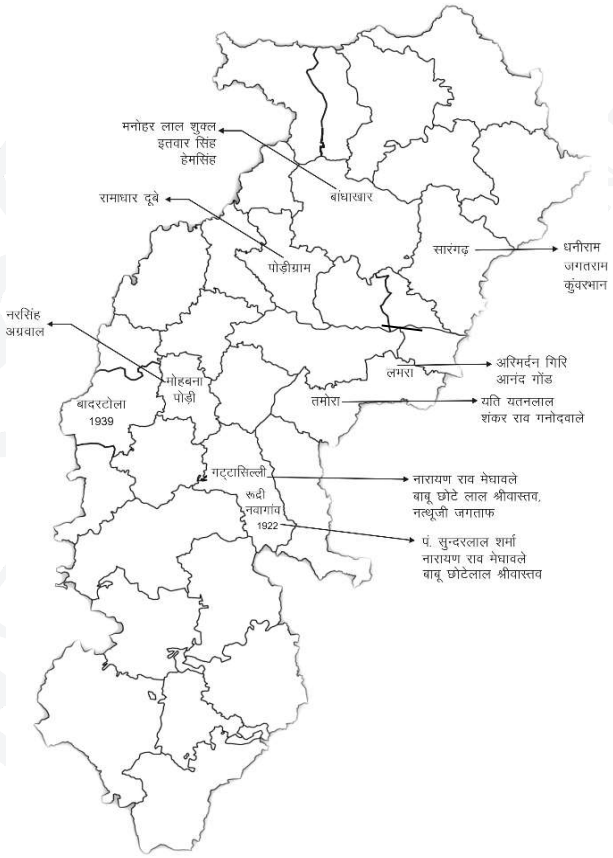


- **गट्टासिल्ली जंगल सत्याग्रह– 1930**
  - ✓ **स्थान** – ठेमली (धमतरी वाले)
  - ✓ **नेतृत्वकर्ता** – नारायण मेघावाले
    बाबू छोटे लाल श्रीवास्तव
    नत्थू जी जगताफ
  - ✓ 1930 में ठमेली गांव के लगभग 800 मवेशी वन विभाग के अधिकारियों द्वार आरक्षित वन क्षेत्र में चरने के अपराध में गट्टासिल्ली गांव के कांजी हाउस में डाल दिया।
  - ✓ कांजी हाउस के पशुओं की नीलामी हेतु बाजार भेजने की तैयारी की जिससे सत्याग्रहियों नं कांजी हाउस के द्वार पर लेट गए, उन्हे हटाने के लिए उन पर **खौलता हुआ गर्म पानी** डाला फिर ी वे सब अडिग रहे अन्ततः विवश होकर अधिकारियों ने मवेशियों को निःशुल्क मुक्त कर दिया।

- **पोड़ी ग्राम जंगल सत्याग्रह– 1 जुलाई 1930**
  - ✓ **स्थान** – सीपत (पोड़ी गांव) बिलासपुर
  - ✓ **नेतृत्वकर्ता** – रामधार दूबे
  - ✓ 28 अक्टूबर 1930 को रामाधार दुबे को गिरफ्तार कर उन्हे 6 माह की सजा दी गयी।

- **मोहबना–पोड़ी जंगल सत्याग्रह (24 जुलाई 1930)**
  - ✓ **स्थान** – मोहबना व पोड़ी गांव (दुर्ग)
  - ✓ **नेतृत्वकर्ता** – नरसिंह प्रसाद अग्रवाल
  - ✓ **24 जुलाई 1930** को मोहबना के आदिवासी ग्रामीणों ने अपने मवेशियों को रक्षित वन में चरने छोड़ दिया।
  - ✓ **414 मवेशियों** को कांजी हाउस में बंद कर दिया गया।
  - ✓ **3 अगस्त 1930** को नरसिंह प्रसाद अग्रवाल के नेतृत्व में एक सभी आयोजित की गयी। जनता को उकसाने के आरोप में इन्हे और अनेक आदिवासियों को गिरफ्तार कर लिया गया।

- **रूद्री नवागांव जंगल सत्याग्रह 22 अगस्त 1930 –5 मार्च 1930**
  - ✓ **स्थान** – रूदी नवागांव (धमतरी)
  - ✓ **नेतृत्वकर्ता** – नारायण राव मेघावले
    बाबू छोटे लाल श्रीवास्तव
    पं. सुन्दरलाल शर्मा
  - ✓ **22 अगस्त 1930** को नवागांव के समीप आरक्षित वन की घास काटकर जंगल कानून का उल्लंघन कर निश्चय किया गया।
  - ✓ **22 अगस्त 1930** को पं. सुन्द्ररलरल शर्मा को राजिम से रूद्री आंदोलन के संचालन हेतु उन्हे रास्ते में अभनपुर में गिरफ्तार की 1 वर्ष के लिए रायपुर जेल भेज दिया गया।
  - ✓ इस सत्याग्रह को 5–5 लोगों के समूह में प्रतिदिन 8 माह तक करना था।
  - ✓ 16 दिसंबर को पुनः सत्याग्रह के परिप्रेक्ष्य में लगभग 5000 लोग एकत्रित हुए। पुलिस ने भीड़ को हटाने हेतू लाठी चालन किया जिसमें एक पुलिसकर्मी को चोट लग गई जिसमें भीड़ में गाली चलायी गयी, जिसमें सिन्धु कुमार रलू नामक व्यक्ति की मृत्यु हो गयी।

- **लभरा ग्राम जंगल सत्याग्रह 1930**
  - ✓ **स्थान** – महासमुंद
  - ✓ **नेतृत्वकर्ता** – अरिमर्दन गिरि
  - ✓ **सत्याग्रहि** – आनंद गोंड
    श्यामलाल गोंड
    फिरतुराम गोंड
    मंगलू गोंड
  - ✓ जंगल सत्याग्रह 8 तारीख को आरंभ होकर 5 दिनों तक चलता रहा
  - ✓ इसमें आसपास के ग्रामीणों सहित कुल 6–7 हजार आदिवासी सत्याग्रहियों ने भाग लिया।

- **तमोरा ग्राम जंगल सत्याग्रह 1930**
  - ✓ **स्थान** – महासमुंद
  - ✓ **नेतृत्वकर्ता** – यतियतनलाल , शंकरराव गनौदवाले
  - ✓ सत्याग्रहियों के एक जत्थे ने भगवती प्रसाद मिश्रा के नेतृत्व में महासमंद के तमोर नामक गांव से जंगल में घास काटकर जंगल कानून भंग किया गया।
  - ✓ एक दिन 10 हजार लागों की भीड़ एकत्रित हुई जिसमें जंगल प्रवेश को रोकने के लिए बंदूकधारी तैनात किए गए। **नेतृत्वकर्ता** – बालिका दयावती
  - ✓ तत्कालीन अनुविभागीय अधिकारी एम.पी.दुबे ने प्रवेश से रोका, इस पर वीर बालिका ने उसे तमाचा मार दिया। और अपने वीरता का प्रदर्शन किया।

## संविधान सभा का गठन और छत्तीसगढ़

- **चुनाव जीतकर आने वाले नेता**

| | |
|---|---|
| 1. पं. रविशंकर शुक्ल (रायपुर)<br>2. बैरिस्टर छेदीलाल (बिलासपुर)<br>3. घनश्याम सिंह गुप्त (दुर्ग) | 1. रघुराज सिंह दीवान (सरगुजा)<br>2. किशोरी मोहन त्रिपाठी (रायगढ़)<br>3. रामप्रसाद पोटाई (कांकेर) |

## स्वतंत्रता दिवस समारोह और छत्तीसगढ़

- 15 अगस्त 1947 को प्रातः मध्यप्रांत और बरार के प्रथम मुख्यमंत्री पं. रविशंकर शुक्ल ने नागपुर राजधानी के एतेहासिक सीताबार्डी के किले पर तिरंगा फहराया।
- **तिरंगा फहराया :–**

| नेता | | स्थान |
|---|---|---|
| 1. वामनराव लाखे | – | गांधी चौक (रायपुर) |
| 2. आर.के.पाटिल | – | पुलिस लाइन (रायपुर) |
| 3. घनश्याम सिंह गुप्त | – | दुर्ग |
| 4. रामगोपाल तिवारी | – | बिलासपुर |

- **15 दिसंबर 1947** को ठाकुर रामप्रसाद पोटाई तथा किशोरी मोहन त्रिपाठी ने मध्य प्रांत की रियासतों के विलीनीकरण की मांग हेतू मेनोरेंडम सरदार पटेल को सौपा।

## छत्तीसगढ़ स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान केन्द्रीय नेताओं का आगमन

| क्र | आगमन तिथि | राष्ट्रीय नेता | आगमन का कारण |
|---|---|---|---|
| 1. | 1917 | बालगंगाधर तिलक | होमरूल आन्दोलन के लिए प्रचार–प्रसार करना |
| 2. | 1918 | रवीन्द्रनाथ टैगोर | |
| 3. | 1920 | वी.वी. गिरि | प्रथम BNC मिल मजदूर आंदोलन के दौरान |
| 4. | 20.21 दिसंबर 1920 | महात्मा गांधी | कंडेल नहर सत्याग्रह के दौरान |
| 5. | 1921 | माखनलाल चतुर्वेदी<br>राजेन्द्र प्रसाद<br>सुभद्रा कुमारी चौहान<br>राजगोपालाचारी | असहयोग आंदोलन के दौरान के प्रचार–प्रसार के लिए |
| 6. | 22–28 नवंबर 1933 | महात्मागांधी | अछूतोद्धार के लिए |
| 7. | 11 दिसंबर 1935 | डॉ. राजेन्द्र प्रसाद | रायपुर कांग्रेस सम्मेलन में |
| 8. | 15–16 दिसंबर 1935 | जवाहर लाल नेहरू | शिक्षक सम्मेलन की अध्यक्षता करने |
| 9. | 1940 | वल्लभ भाई पटेल | रायपुर कांग्रेस भवन उद्घाटन |
| 10. | 1947 | वल्लभ भाई पटेल | रिसासतों का छ.ग. में विलय करने |